CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री हनुमान् चालीसा

संकटमोचन हनुमानाष्टक, बजरंग बाण,
श्रीरामस्तुति, आरति तथा शिवपञ्चाक्षरस्तोत्र भएको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूजा गर्ने विधि

श्रीहनुमान्को नित्य पूजा गर्ने साधकले शुद्ध (रातो) वस्त्र पहिरेर पूर्व वा उत्तर मुख पारेर बस्नुपर्छ । श्रीहनुमान्जीको मूर्ति, चित्र, ताँबो वा भोजपत्रअंकित यंत्र सामुन्ने राख्नुपर्छ । रातो फूल, अक्षता, सिन्दूरले पूजा गरी बुँदिया, भुटेको चना, चिरौंजी दाना र नरिवल चढाई हातमा अक्षता र फूल लिएर तलका मंत्रले श्रीहनुमान्जीको ध्यान गर्नुपर्छ ।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

यसपछि फूल, अक्षता आदि अर्पण गरेर चालीसाको पाठ गरिसकेपछि ॐ हं हनुमते नमः मन्त्रको चन्दन, रुद्राक्ष आदिको मालाले १०८ पटक जप गर्नाले यो विशेष फलदायी हुन्छ ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ॥
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम दूत अतुलित बल धामा ॥
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ॥
कुमति निवार सुमति के संगी ॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ॥
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥४॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ॥
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥५॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकर सुवन केसरीनंदन ॥
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥६॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर ॥
राम काज करिबे को आतुर ॥७॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ॥
राम लखन सीता मन बसिया ॥८॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ॥
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥९॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भीम रूप धरि असुर सँहारे ॥
रामचंद्र के काज सँवारे ॥१०॥
लाय सजीवन लखन जियाये ॥
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ॥
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ॥
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

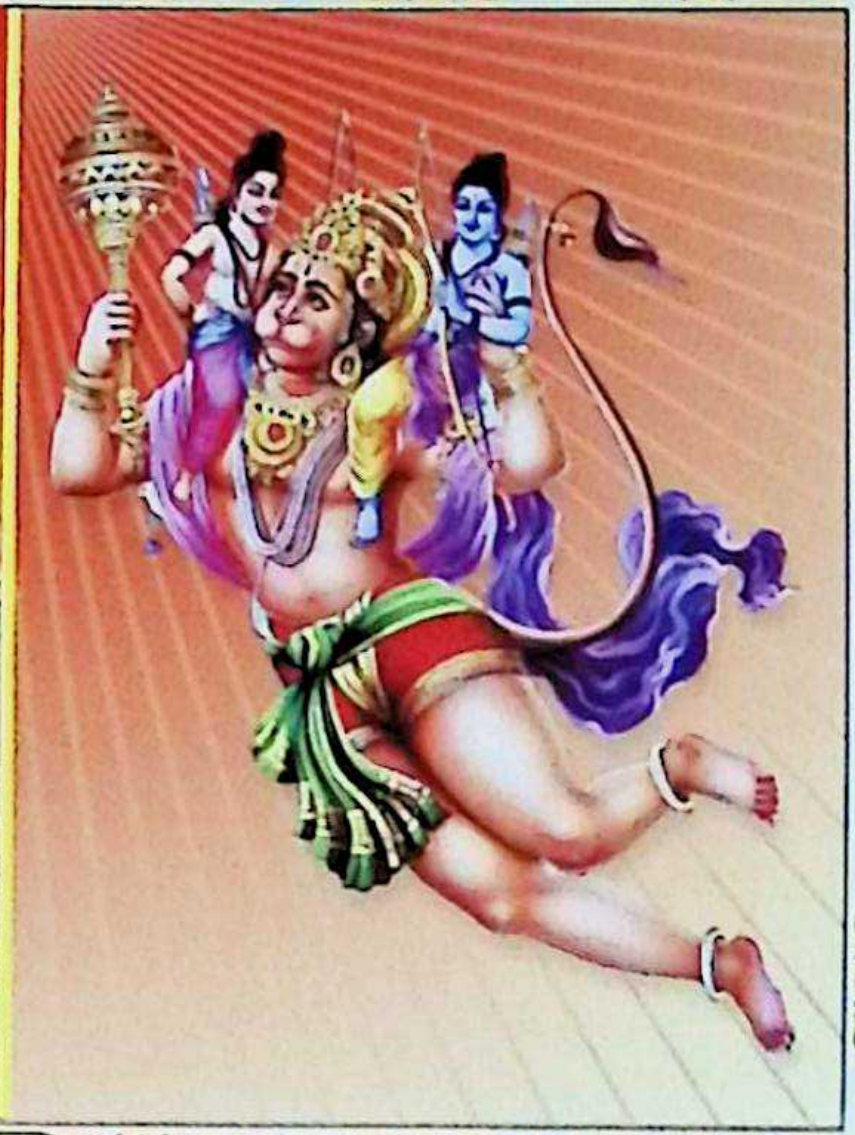

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ॥
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ॥
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ॥
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ॥
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ॥
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ॥
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते ॥
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे ॥
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ॥
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै ॥
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ॥
महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥
नासै रोग हरै सब पीरा ॥
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकट तें हनुमान छुड़ावै ॥
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥
सब पर राम तपस्वी राजा ॥
तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥
और मनोरथ जो कोइ लावै ॥
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥२८॥
चारों जुग परताप तुम्हारा ॥
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधु संत के तुम रखवारे ॥
असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ॥
अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ॥
सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को पावै ॥
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंत काल रघुबर पुर जाई ॥
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥३४॥
और देवता चित्त न धरई ॥
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥३५॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ॥
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं ॥
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥३७॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सत बार पाठ कर कोई ॥
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ॥
होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ॥
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥४०॥

दोहा- पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति श्रीहनुमान्-चालीसा सम्पूर्ण ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ॥१॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो। को०-२॥
अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्रान उबारो। को०-३॥
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो। को०-४॥
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो। को०-५॥
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो। को०-६॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो । को०-७ ॥
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो । को०-८ ॥

दोहा- लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री बजरंग-बाण

दोहा - निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा । सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा । अति आतुर जम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर महँ भई ॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥
जय गिरिधर जय जय सुखसागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले । बैरिहिं मारु बज्र की कीले ॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ॥
आंकार हुंकार महाप्रभु धावो । वज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा । ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि सपथ पायके । राम दूत धरू मारु जायके ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं । येहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिसाच निशाचर । अग्नि बैताल काल मारीमर ॥
इन्हें मारु तोहिं सपथ राम की । राखु नाथ मर्याद नाम की ॥
जनकसुता हरिदास कहावो । ताकी सपथ विलम्ब न लावो ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुख नासा ॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहिं राम दोहाई । पाँय परौं कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनंद हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै । ताते भूत प्रेत सब काँपै ॥
धूप देय अरू जपै हमेशा । ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

दोहा- प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान ॥
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

इति बजरंग बाण सम्पूर्ण ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहनुमत्-स्तवन

सो० – प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् । कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं, यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां, नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री हनुमानजीको आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥ टेक॥
जाके बल से गिरिवर काँपै । रोग-दोष जाके निकट न झाँपै ॥ १ ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ २ ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ३ ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥ ४ ॥
लंका जारि असुर संहारे । सियारामजीके काज सँवारे ॥ ५ ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्रान उबारे ॥ ६ ॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ७ ॥
बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥ ८ ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥ ९ ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजनी माई ॥ १० ॥
जो हनुमान (जी) की आरति गावै । बसि बैकुंठ परमपद पावै ॥ ११ ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरामवन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं
सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनं ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सो०- जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचन्द्रको जय ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य- मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥
य(क्ष)ज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

॥ इति ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

०७०२२०७६

चित्रकूट प्रकाशन

हनुमानस्थान, काठमाडौं मो. ९८०१०२२२६७

प्राप्ति स्थान: **गुरु पुस्तक विक्रेता**

भोटाहिटी, काठमाडौं फोन: ०१-४२३९२४२

(धार्मिक तथा कर्मकाण्डसम्बन्धी पुस्तकका साथै पूजा-सामग्रीको लागि हामीलाई सम्झनुहोस् ।)

मित्रता छापाखाना, गोल्मढी, भक्तपुर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal